

---

brahmadevakRitaM rAmastutiH

श्रीरामस्तुती ब्रह्मदेवकृतम्

Document Information

---

Text title : brahmadevakRitaM rAmastutiH

File name : brahmaraamastuti.itx

Category : raama, stotra, vyAsa

Location : doc\_raama

Author : Brahmadeva

Transliterated by : WebD

Proofread by : Ravin Bhalekar ravibhalekar at hotmail.com

Description-comments : adhyAtmarAmAyaNa

Latest update : January 03, 2005

Send corrections to : sanskrit at cheerful dot c om

---

This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study and research. The file is not to be copied or reposted without permission, for promotion of any website or individuals or for commercial purpose.

**Please help to maintain respect for volunteer spirit.**

---

Please note that proofreading is done using Devanagari version and other language/scripts are generated using **sanscript**.

---

December 22, 2023

*sanskritdocuments.org*

---

श्रीरामस्तुती ब्रह्मदेवकृतम्



श्री गणेशाय नमः ।

ब्रह्मोवाचः ।

वन्दे देवं विष्णुमशेषस्थितिछेतुं त्वामध्यात्मज्ञानिभिरन्तर्दृष्टिं भाव्यम् ।  
उयाउेयद्भ्रविडीनं परमेकं सत्तामात्रं सर्वदृष्टिस्थं दृशिउपम् ॥ १ ॥

प्राणपानौ निश्चयबुद्ध्या लुष्टिं रुद्ध्वा छित्वा सर्वं संशयबन्धं विषयौघान् ।  
पश्यन्तीशं यं गतमोडा यतयस्तं वन्दे रामं रत्नकिरीटं रविभासम् ॥ २ ॥

मायातीतं माधवमाधं जगदादिं मानातीतं मोडविनाशं मुनिवन्द्यम् ।  
योगिध्येयं योगविधानं परिपूर्णां वन्दे रामं रञ्जितलोकं रमणीयम् ॥ ३ ॥

भावाभावप्रत्ययडीनं भवमुष्यैर्भोगासक्तैरर्थितपादाम्बुजयुग्मम् ।  
नित्यं शुद्धं बुद्धमनन्तं प्राणवाप्यं वन्दे रामं वीरमशेषासुरदावम् ॥ ४ ॥

त्वं मे नाथो नाथितकार्याभिलकारी मानातीतो माधवउपोऽभिलधारी ।  
भक्त्या गम्यो भावितउपो भवकारी योगाभ्यासैर्भावितयेतःसड्यारी ॥ ५ ॥

त्वामाधन्तं लोकततीनां परमीशं लोकानां नो लौकिकमानैरधिगम्यम् ।  
भक्तिश्रद्धाभावसमेतैर्भजनीयं वन्दे रामं सुन्दरमिन्दीवरनीलम् ॥ ६ ॥

को वा ज्ञातुं त्वामतिमानं गतमानं मानासक्तो माधवशक्तो मुनिमान्यम् ।  
वृन्दारण्ये वन्दितवृन्दारकवृन्दं वन्दे रामं भवमुभवन्धं सुभक्तम् ॥ ७ ॥

नानाशास्त्रैर्वेदकदम्बैः प्रतिपाद्यं नित्यानन्दं निर्विषयज्ञानमनादिम् ।  
मत्सेवार्थं मानुषभावं प्रतिपन्नं वन्दे रामं मरकतवर्णं मथुरेशम् ॥ ८ ॥

श्रद्धायुक्तो यः पठतीमं स्तवमाधं ब्राह्मं ब्रह्मज्ञानविधानं भुवि मर्त्यः ।  
रामं श्यामं कामिकामप्रदमीशं ध्यात्वा ध्याता पातकजालैर्विगतः स्यात् ॥ ९ ॥

॥ इति श्रीमद्भ्यात्मरामायणे युद्धकाण्डे ब्रह्मदेवकृतं रामस्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥

*brahmadevakRitaM rAmastutiH*  
pdf was typeset on December 22, 2023

Please send corrections to [sanskrit@cheerful.com](mailto:sanskrit@cheerful.com)

